247
868 P
H
Microfilm

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1205/10|8

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं॰ Acc. No. 868

* वन्देमातरम् *

स्वतन्त्रता की तलवार

विपदाओं के मेघ देखकर तुम घबराना जरा नहीं।
तनिक न डिगना, जो डिग जावें चन्द्र सूर्य औ धरा कहीं

संग्रहकर्त्ता व प्रकाशक—
जगन्नाथ प्रसाद अरोड़ा,
बनारस सिटी।

प्रथम संस्करण] सन् १९३० ई० [मूल्य -)
सैकड़ा ३=) हजार २५)

RECEIVED.
30 MAR. 1931

891.431
~~A 67 Saw~~
~~K 67 Saw~~
~~A 267 Saw~~

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 868
Date 23.12.71
GOVT. OF INDIA

891.431
K 67 SW

स्वतन्त्रता की तलवार ।

(१) उधम की जुल्म

जुल्म डायर ने किया था, रंग जमाने के लिये ।
हिन्द वालों को मुसीबत में, फसाने के लिये ॥
खून से पंजाब में, डायर ने लिखकर डायरी ।
रूबरू रख दी हमारे, दिल जलाने के लिये ॥
बाग जलिया में शहीदों की, बने गर यादगार ।
जायँगे आशिक वतन हा, आँसू बहाने के लिये ॥
जिसने तन मन धन किया, योरप पै निसार ।
आप अब तैयार हैं, उसको मिटाने के लिये ॥
जब कहा मैंने कि, डायर ने मारा बेखता ।
हँस के बोला जुल्म था, ये आजमाने के लिये ॥
सर हथेली पर जो रक्खा, डर है फिर किस बात का ।
सर कटाने के लिये, है जान जाने के लिये ॥

(२)

देश का गर आप के दिल में ख्याल हो ।
तो दुश्मनों से आपका बांका न बाल हो ॥
कट जायँ बेढ़ियां ये गुलामी की सहज में ।

हिम्मत का दौरदौरा हो भारत निहाल हो ॥
गरचे विदेशी वस्त्रों को दिल से उतार दो।
तो उन स्वार्थी जुलाहों का अबतर यह हाल हो॥
मोटा ही खानपान हो मोटा पहरान हो।
तो स्वर्ग सम ये भूमि हो आजादी हाल हो ॥
बाहर न जाय गल्ला स्वदेश का अगर ।
हर साल हो समा फिर हरगिज न काल हो ॥
यतीन शहीद की है हसरत ये आखीरी ।
पीछे कदम न जब तक दें पूरा सवाल हो ॥
चर्खे चलायें गरचे भारत की नारियाँ ।
खद्दर का फेर हरगिज न यहाँ पै काल हो ॥
जावें जेहल में खुश हो गरचे जो भारती।
सूखा चमन यह फिर से देखो बहाल हो ॥
दुश्मन की गोलियों को सीने पै खायँ गर ।
भारत का नाम हरसू हो जाहिर इकबाल हो॥
वमलट यह सल्तनत की अब यहां पै कहाँ गुजर ।
जब हरएक बच्चा बच्चा इससे बेहाल हो ॥

(३)

आजादी का दीवाना है मस्ताना भगतसिंह ।
बम केश में पकड़ाना ये दीवाना भगत सिंह ॥
आलम की एक सान है मस्ताना भगतसिंह ।
हम बागी का अरमान है दीवाना भगतसिंह ॥

लाहौर का रहने वाला है वो शेरोबबर दिल।
आजादी की थी चाह उसे मस्ताना भगतसिंह ॥
देता था लाल परचा वो लाहौर के थानों में।
हो जावो सावधान ये कहता था भगतसिंह ॥
होती थी मीटिंग असेम्बली में जिस दम फेका बम।
इस केश में पकड़ा गया मस्ताना भगतसिंह ॥

(४) लंदन का राज्य

काकुल की तरह आज जो बल खाए हुए हैं।
थोड़ी सी हुकूमत पै इतराए हुए हैं ॥
परवाह नहीं है देश, धर्म, नीति की इनको।
स्वारथ का भूत सर पर चढ़ाए हुए हैं।
जिस हाँड़ी में खाते हैं करते हैं उसमें छेद।
घर अपना अपने हाथ जलाए हुए हैं ॥
बातों में आ कर गैर के बनते हैं निर्दयी।
डंडा ये बेकसों पर उठाए हुए हैं ॥
एक रोज ये रहे मेरे गले का हार।
अब कंकड़ हो ये आँख का सताए हुए हैं ॥
बुद्धी हुई है नष्ट बस संगत प्रभाव से।
देश भाइयों का रिस्ता ये भुलाए हुए हैं ॥
गरचे जो हो जाय अक्ल इनकी ठिकाने,
हिन्द क्या लन्दन का राज पाए हुए हैं ॥

(५)

थे हम भी कभी जाँबाज वतन,
ऐ चर्ख ! हमें बरबाद न कर।
जिंदा हैं मगर यह जीस्त नहीं,
अब और सितम ईजाद न कर।
जर और जवाहर सारा लुटा,
सब शान गई, नादार बने।
फैशन पै लुटाते मुल्क का जर,
नाशाद को क्यों तू शाद न कर॥
जब गांधी जी ने जोर दिया,
जेलों के उधर दरवाजे खुले।
हम आहो बुका से काम जो लें,
देते हैं डपट फरियाद न कर॥
गोलमेज का तोफा दिया जो हमें,
नादान खुशी से उछलने लगे।
क्या जाल बिछाया हिकमत का,
बातों में फकत आजाद न कर॥
कांग्रेस ने जो देखा रंग बुरा,
दिया डंका बजा आजादी का।
हे कृष्ण मुरारी कर तू मदद,
मजलुम को अब बेदाद न कर॥

(६)

जीते हैं जब तलक हम भारत का दम भरेंगे।
सौ जन्म पैदा होके हित देश के मरेंगे॥
हरगिज़ न पाँव पीछे टलने का अब हमारा।
सब देश भाइयों का ता उम्र दुख हरेंगे॥
पावर है उसको इतना फाँसी तलक चढ़ादे।
पर हम अहिंसा व्रत से हरगिज़ नहीं टलेंगे॥
कातिल तुम्हारी हरकत हमसे सही न जाती।
देखें ये आप कब तक हमपर जबर करेंगे॥
इस वख्त देश पर जो जुल्म हो रहा है।
जाकर खुदा के आगे महशर में हम कहेंगे॥
लेवें गवाह में हम जलियान वाला बाग।
पेशावर वाला क़िस्सा दरपेश हम करेंगे॥
ये देश भाइयो तुम मादक पदार्थ छोड़ो।
बमलद हमेशा सबसे येही कहा करेंगे॥

(७)

किसकी बुलन्द आवाज़ ने
भारत को अब जगा दिया।
सोया पड़ा था बेखबर,
किसने इसे उठा दिया॥
गुलामी में मेरे थे कसे,

चंगुल में मेरे थे फँसे।
रस्ता इन्हें आज़ादी का,
गांधी ने अब बता दिया॥
क्या चैन से गुजरती थी,
हिस्की शराब ढलती थी।
फ़ाकेकशी के हर्जे तक अब,
हमको बस पहुँचा दिया॥
बिलायती कपड़ा त्यागकर,
खद्दर का कर प्रचार सब।
लंका शायर को एक दम,
मिल कर के बस रुला दिया॥
करके जबर भी हारे हम,
आन्दोलन न होता कुछ भी कम।
चिढ़के दमन से और भी,
लंदन को बस हिला दिया॥
माई गाड क्या करेंगे अब,
या भूखे ही अब मरेंगे सब,
इसने तो मेरे एक दम,
नाकों में दम पहुँचा दिया॥
गर योंही बीते कुछ माह,
हो जाय लंडन खुद तबाह।

॥ बमलट ने सच्चा हाल यह,
लिखकर तुम्हें सुना दिया ॥

(८)

जालिम तेरी तलवार के डर से न डरेंगे।
हँस खेल हेल मेल से कुल जेल भरेंगे॥
चक्की चलावें शौक से मानिन्द रेल के।
छाती पै दुश्मनों के खूब दाल दलेंगे॥
तुटेंगे ऐश जेल में बट बट के रस्सियाँ।
ऊसर उजाड़ भूमि को आबाद करेंगे॥
बाँधेंगे टाट टाट का बिस्तर लगा-लगा।
फाकेकशी करेंगे डरेंगे न मरेंगे॥
परवाह जान की नहीं हरगिज़ बसन्त को।
झेलें हजार सख्तियाँ तिल भर न टरेंगे॥

(६)

भारत के शेर जागो बदला है अब जमाना।
प्यारे वतन को इस दम आजाद है कराना॥
मत बुजदिली को हरगिज तुम पास दो फटकने।
आखिर तो दम अदम को होगा कभी रवाना॥
परदेशियों का इस दम जो साथ दे रहे हैं।
उनको हराम है अब भारत का अन्न खाना॥
माता की कोख नाहक करते हो तुम कलंकित।

वालंटियर बनो तुम सब छोड़ दो बहाना ॥
मन में झिझक न लाओ आगे कदम बढ़ाओ ।
है स्वर्ग के बराबर फाँसी पर झूल जाना ॥

(१०) हुकूमत मिटानी पड़ेगी ॥

सितमगर की हस्ती मिटानी पड़ेगी ।
हमें अपनी करके दिखानी पड़ेगी ॥
कभी उफ़ न लाएँगे अपनी ज़ुबाँ पर ।
मुसीबत सभी कुछ उठानी पड़ेगी ॥
बहुत हो चुका, अब सहें हम कहाँ तक ।
ये बेईमानी सारी हटानी पड़ेगी ॥
बिदेसी बसन औ नशे की जिनिस पर ।
हमें अब पिकेटिंग करानी पड़ेगी ॥
नमक को बनाकर औ कर बंद करके ।
आज़ादी की झंडी उड़ानी पड़ेगी ॥
करेंगे हम आज़ाद भारत को अपने ।
बिदेशी हुकूमत मिटानी पड़ेगी ॥

(११)

उठो, भलाई करो वतन की,
तुम्हें जवाहर जगा रहा है ।
निसार कर दो स्वदेश पर जाँ,
ये पाठ प्यारा पढ़ा रहा है ॥

जगी जहाँ की हैं क़ौमें सारी,
तुम्हें कहाँ से है नींद आई।
खबर नहीं क्या ज़रा भी तुमको,
कि जुल्म ज़ालिम मचा रहा है ॥
उठो, न आलस्य अब करो यों,
बढ़ा दो जल्दी कदम अगाड़ी।
बना दो आजाद देश को तुम,
जो दुःख मुद्दत से पा रहा है ॥
उठा अहिंसा-कटार कर में,
उड़ा दो जंजीर दासता की।
दिखा दो ज़ालिम को अपना जौहर,
जो बेकसों को सता रहा है ॥
तुम्हारे ही ज़र को लूट करके,
हुआ जो खुशहाल शक्तिशाली।
वही "नरायण" तुम्हारा देखो,
बुरी तरह खूँ बहा रहा है ॥

(१२) स्वतंत्र होकर

गुलाम रहकर बुरा है जीना,
है मरना अच्छा स्वतंत्र होकर।
सुधा को तजकर गरल का प्याला,
है भरना अच्छा स्वतंत्र होकर ॥

पड़ी हो हाथों में हथकड़ी गर,
तो स्वर्ग का सुख न चाहिए फिर।
नरक में, दुख में, निवास निशदिन,
है करना अच्छा स्वतंत्र होकर॥

गुलाम रह कर मिले जो घर में,
सुस्वादु भोजन तो तुच्छ है वह।
उपास करके अकेले वन में,
विचरना अच्छा स्वतन्त्र होकर॥

जो दासता में मिलें उपाधी,
या मान पदवी, तो छोड़ दीजे।
घृणा व अपमान के गढ़े में,
उतरना अच्छा स्वतंत्र होकर॥

गुलाम रहकर विदेशी मलमल,
अगर पहनने को मिल रही हो।
तो लाख दर्जे है उससे खद्दर,
पहरना अच्छा स्वतन्त्र होकर॥

स्वतन्त्रता के लिये मरेंगे,
स्वतन्त्रता ध्येय है हमारा।
'दिनेश' फाँसी पै सर खुशी से,
है धरना अच्छा स्वतंत्र होकर॥

(१३)

कौम के खादिम की है जागीर वन्देमातरम् ।
विश्व-विजयी शत्रु-विजयी मंत्र वन्देमातरम् ॥
जालिमों को है उधर बंदूक अपनी पर गरूर ।
है इधर हम बेकसों का तीर वंदेमातरम् ॥
कत्ल कर हमको न कातिल तू हमारे खून से ।
तेग पर हो जायगा तहरीर वन्देमातरम् ॥
फिक्र क्या जल्लाद ने गर कत्ल पर बाँधी कमर ।
रोक देगा दूर से शमशीर वन्देमातरम् ॥
जुल्म से गर कर दिया खामोश मुझको देखना ।
बोल उटठेगी मेरी तस्वीर वन्देमातरम् ॥
सर जमीं इङ्गलैंड की हिल जायगी दो रोज में।
गर दिखायेगी कभी तासीर वन्देमातरम् ॥
संतरी मुजतरिब 'शर्म्मा' की भी हर झंकार में ।
बोलती थी जेल में जंजीर वन्देमातरम् ॥

(१४)

आओ वीरो! मर्द बनो, अब जेल तुम्हें भरना होगा।
सत्याग्रह के समर क्षेत्रमें, आ आ के डटना होगा ॥
शूर लड़ाके मर्दाने हो, पैर हटाना कभी नहीं ।
मरते मरते माता का अब, कर्ज अदा करना होगा॥
वक्त नहीं है ऐ वीरों, अब गाफिल होकर सोनेका ।
दौड़ चलो मैदानों में, माता का दुःख हरना होगा ॥

याद करो माता का तुमने, बहुत दूध है पान किया।
दूध पिये की लाज बहादुर, किसी तरह रखना होगा॥
शेर मर्द हो वीर बांकुड़ा, याद करो कर्तव्यों का।
मातृ वेदी पर हँसते हँसते कट कट के मरना होगा॥

(१५) ८।।।५

हुये तुमको अब हम भगाने के काबिल।
है योरुप की हस्ती मिटाने के काबिल॥
जो डायर ने कीने जुलुम थे यहां पर।
है हाजिर ये बदला चुकाने के काबिल॥
ये देखेंगे हम भी दमन चक्र तेरा।
यहां लाखों हैं गरदन कटाने के काबिल॥
पकड़ने से उनके रुके क्यों आन्दोलन।
हैं हरएक लीडर बनाने के काबिल॥
हुआ आब दाना खतम यहाँ तुम्हारा।
अब बातों में भारत न आने के काबिल॥
मिले गरचे हमको इशारा जरा सा।
दिखावें वो हिम्मत दिखाने के काबिल॥
जेहलखानों की देखो बनी धर्मशाला।
ये अच्छे मुसाफिर टिकाने के काबिल॥
पैमालों पै अपने करो ख्याल जालिम।
अब बमलट नहीं हैंगे गाने के काबिल॥

(१६)

भारत न रह सकेगा हर्गिज गुलामखाना,
आजाद होगा होगा आता है वह जमाना।
खूँ खौलने लगा है हिन्दुस्तानियों का,
कर देंगे जालिमों का हम बंद जुल्म ढाना॥
कौमी तिरंगे झण्डे पर जाँ निसार अपनी,
हिन्दू, मसीह, मुसलिम गाते हैं यह तराना॥
अब भेड़ और बकरी बनकर न हम रहेंगे,
इस पस्त हिम्मती का होगा कहीं ठिकाना॥
परवाह अब किसे है जेल ओ दमन की,
एक खेल हो रहा है फाँसी पर झूल जाना।
भारत वतन हमारा भारत के हैं हम बच्चे,
माता के वास्ते है मंजूर सर कटाना॥

(१७)

जंजीर की झंकार में शुभ गीत गायेंगे।
तलवार के आघात में निज जय मनाते जायेंगे॥
रहते हुए तन प्राण रण से मुख न मोड़ेंगे कभी।
रहते हुए हम शस्त्र के भी शस्त्र नहीं छोड़ें कभी॥
आज ही बस देश का ऊँचे शिखर पर वास हो।
खाने पड़ें पत्ते परन्तु दासता का नाश हो॥

* समाप्त *

जे० पी० अरोड़ा द्वारा—
"लक्ष्मी-प्रेस" नीलकण्ठ, बनारस में मुद्रित।